2 फरवरी 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 21
फरवरी (प्रथम), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

सनावद (म.प्र.) : यहाँ ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के गृहनगर में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन परमागम ट्रस्ट एवं श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, सनावद के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव मंगलवार, दिनांक 7 जनवरी से रविवार 12 जनवरी, 2020 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई अहमदाबाद, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित गुलाबचंदजी बीना आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के प्रतिष्ठाचार्यत्व, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, ब्र. नन्हेभैया सागर, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन के सहप्रतिष्ठाचार्यत्व में पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शाहगढ, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित रमेशजी सनावद, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित रतनचंदजी कोटा, पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा, पण्डित सम्मेदजी टीकमगढ, पण्डित अनेकान्तजी रहली के सहयोग से संपन्न हुआ। महोत्सव का मंच संचालन व निर्देशन पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर एवं सह-निर्देशन पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन द्वारा किया गया।

बालक नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती मीना-राजकुमार जैन (पुट्ठा मिल) भोपाल को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री विनी-मीनल बड़जात्या इन्दौर, कुबेर इन्द्र श्री राहुल-सुनीता गंगवाल जयपुर एवं यज्ञनायक-नायिका श्री जिनेश-रुपम जैन (लॉरेल शर्ट) इन्दौर थे। महोत्सव का मंच उद्घाटन श्री जयकुमार-इन्दू जैन परिवार रतलाम ने, सिंहद्वार का उद्घाटन श्री राजेन्द्रजी मोदी भोपाल, श्री प्रणवजी चौधरी भोपाल व श्री ज्ञानचंदजी अशर्फी भोपाल ने, यागमण्डल विधान का उद्घाटन श्री वज्रसेन-सुनीता, श्री शोभित जैन परिवार विश्वासनगर दिल्ली ने एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री अशोक-रितु जैन इन्दौर ने किया।

दिनांक 9 जनवरी को बाल तीर्थंकर का सौधर्मादि इन्द्रों के पश्चात् सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री अशोकजी जैन अरिहंत कैपिटल इन्दौर को मिला। सायंकाल विश्वप्रसिद्ध 70 फीट का मणिमंडित विशाल पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन श्री जयकुमार-इंदूजी, श्री निलय-संगीताजी व साकेतजी जैन परिवार रतलाम ने किया एवं सर्वप्रथम आहारदान श्री नेमिषभाई शाह एवं श्री अनंतभाई शेठ परिवार मुम्बई ने किया।

इस पंचकल्याणक में अत्यंत सुन्दर और आकर्षक 38 प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की गई।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। महोत्सव में ज्ञानकल्याणक के दिन सायंकाल बा. ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली को ऐरावत हाथी पर बैठाकर बैण्ड बाजों सहित मंच पर लाया गया तथा मुमुक्षु सम्मान समारोह समिति द्वारा तत्त्वप्रचार में उनके आजीवन विशेष योगदान हेतु विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर ने किया। इस प्रसंग पर ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री के संस्कार सुधा विशेषांक का विमोचन किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 4500-5000 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुंची।

महोत्सव में समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ●

विशेष सूचना

अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में जैनपथप्रदर्शक का विशेषांक शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है; अतः निवेदन है कि उनसे संबंधित फोटो, लेख, संस्मरण आदि वाट्सएप्प या ईमेल द्वारा अवश्य भेजें।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर
मोबाइल - 9660668506
Email - ptstjaipur@yahoo.com

सम्पादकीय –

पुद्गल द्रव्य एवं वैज्ञानिक आविष्कार

1

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

आज जगत में व्याप्त वैज्ञानिक आविष्कारों के चमत्कार से कौन अनभिज्ञ है? ये हमारे दैनिक जीवन में निरन्तर परिचय एवं अनुभव में आ रहे हैं। इन सभी आविष्कारों का उद्गम स्रोत क्या है? इन आविष्कारों के विषय में जैनदर्शन की क्या अवधारणा है? क्या दर्शन और विज्ञान का परस्पर में कोई सम्बन्ध है? वस्तुत: जैनदर्शन शाश्वत/ध्रुव/पारमार्थिक सत्य को बताता है; जबकि विज्ञान अपने संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर वर्तमान सापेक्ष सत्य को उजागर करता है। यह तो निर्विवाद सत्य है कि दार्शनिक विचारधाराएं विज्ञान से अतिप्राचीन हैं। अत: यह कहना किसी भी रूप में अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि वर्तमान वैज्ञानिक आविष्कारों के बीज प्राचीन जैन आगमों में उपलब्ध हैं। वैज्ञानिक आविष्कारों का सम्बन्ध जैनदर्शन में प्ररूपित पुद्गल द्रव्य से है।

द्रव्य जैनदर्शन में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द है, जिसका प्रयोग वस्तु/पदार्थ के अर्थ में होता है। जिसका अस्तित्व है, वही द्रव्य है। उमास्वामी आचार्य के शब्दों में कहें तो **'सत् द्रव्य लक्षणम्'**[1] अर्थात् द्रव्य का लक्षण सत् है। सत् अर्थात् जिसकी सत्ता है, अस्तित्व है, वही द्रव्य है। सत् को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि **'उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्'**[2] अर्थात् जो उत्पाद-व्यय और ध्रुवता से युक्त हो, वह सत् है और सत् द्रव्य का लक्षण है। **दव्वं सल्लक्खणियं उप्पादव्वय धुवत्तसंजुत्तं**[3] – कहकर आचार्य कुन्दकुन्द ने भी यही बात कही है।

अभिप्राय यह है कि जो बदलकर भी अपने अस्तित्व को कभी न खोवे वह द्रव्य है। यह शाश्वत रहकर भी नित्य बदलता रहता है – यही इसका उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यपना है।

जैनदर्शन में मूल द्रव्यों की संख्या 6 कही है। जाति अपेक्षा से जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश एवं काल – ये 6 द्रव्य हैं।[4] संख्या अपेक्षा से जीव अनंत, पुद्गल अनंतानंत, धर्म द्रव्य एक, अधर्म द्रव्य एक, आकाश द्रव्य एक और काल द्रव्य असंख्यात हैं।[5] इसप्रकार इन छह जाति के द्रव्यों का समुदाय ही लोक है।[6] इसीलिए कहा गया है कि **'षट्द्रव्यात्मको लोक:'**[7] अर्थात् लोक छह द्रव्यात्मक है। त्रिलोकसार ग्रन्थ में इस लोक को अकृत्रिम, अनादिनिधन, स्वभाव से ही निर्मित तथा जीव व अजीव द्रव्यों से व्याप्त बताया है।[8] ये षट् द्रव्यात्मक लोक शाश्वत है, इसका कभी नाश नहीं होता; क्योंकि जैन आगमों के अनुसार वस्तु का मूल स्वरूप अपरिवर्तनीय है। सृष्टि में कोई द्रव्य नया उत्पन्न भी नहीं होता तथा नष्ट भी नहीं होता, मात्र उसकी अवस्थाएं बदलती हैं।

आधुनिक विज्ञान भी इस तथ्य को स्वीकार करने लगा है। वैज्ञानिक मानते हैं कि शक्ति या मात्रा कभी नष्ट नहीं होती, वह अन्य रूप में परिवर्तित हो जाती है। विज्ञान में कहा है –

Matter and energy neither be created nor be destroyed. Each can be completely changed into another form or into one another.[9]

विज्ञान का मूलभूत सिद्धान्त है कि किसी भी नयी वस्तु की सृष्टि नहीं होती है एवं कोई वस्तु सम्पूर्ण रूप से नष्ट नहीं होती। केवल उसके आकार और पर्याय में परिवर्तन होता है।

रसायन विज्ञान से यह बात आसानी से स्पष्ट हो जाती है। उदाहरण स्वरूप यदि कोयले के जलने की बात करें तो हम जिसे कोयले का जलना कहते हैं, उसे रसायन विज्ञान निम्न रासायनिक क्रिया[10] द्वारा व्यक्त करता है –

$$C+O_2 = CO_2 + \text{ऊर्जा}$$

(कार्बन) + (ऑक्सीजन) = (कार्बनडायऑक्साइड) + ऊर्जा

भौतिक विज्ञान द्वारा इस क्रिया का विश्लेषण करें तो ज्ञात होता है कि कार्बन अणु (C) में 6 प्रोटॉन, 6 न्यूट्रॉन एवं 6 इलेक्ट्रॉन थे, ऑक्सीजन के अणु (O_2) में 16 प्रोटॉन, 16 न्यूट्रॉन एवं 16 इलेक्ट्रॉन थे।

कार्बन और ऑक्सीजन मिलकर बनी कार्बनडाय ऑक्साइड में 22 प्रोटॉन, 22 न्यूट्रॉन एवं 22 इलेक्ट्रॉन हैं अर्थात् जलने के बाद भी प्रोटॉन, न्यूट्रॉन एवं इलेक्ट्रॉन की संख्या उतनी ही है, जितनी पहले थी तब फिर क्या नष्ट हुआ और क्या उत्पन्न हुआ?

स्थूल दृष्टि से देखने पर कार्बन जला दिखता है, पर विज्ञान भी यह मानता है कि उसके सभी इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन व न्यूट्रॉन सुरक्षित हैं। वास्तव में कार्बन और ऑक्सीजनरूप अवस्था नष्ट होकर कार्बनडाय-ऑक्साइडरूप अवस्था उत्पन्न हुई और उनका द्रव्य (प्रोटॉन आदि) ज्यों के त्यों रहे।

निष्कर्ष यही है कि जैनदर्शन मान्य द्रव्यों की नित्यता को आधुनिक विज्ञान भी मानने लगा है, सिद्ध करने लगा है। **(क्रमश:)**

1. तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय-5, सूत्र-29 2. वही, सूत्र-30
3. पंचास्तिकाय संग्रह, गाथा-10
4. नियमसार, गाथा-9 एवं तत्त्वार्थसूत्र, 5/1, 2, 3, 39
5. गोम्मटसार जीवकाण्ड, गाथा-588
6. पंचास्तिकाय संग्रह, गाथा-3
7. जैन सिद्धान्त दीपिका, 1/8
8. त्रिलोकसार, गाथा-4
9. ब्रह्माण्ड के रहस्य, पृष्ठ-24
10. वही, पृष्ठ-28

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

1 – डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

प्रश्न 1 दिगम्बर परम्परा के शिरोमणि आचार्य कौन हैं?
उत्तर – आचार्य कुन्दकुन्द
प्रश्न 2 जिनवाणी का सिरमौर ग्रन्थ कौन सा है?
उत्तर – समयसार
प्रश्न 3 समयसार के कर्ता (रचयिता) कौन हैं?
उत्तर – आचार्य कुन्दकुन्द
प्रश्न 4 शुद्धात्मा का प्रतिपादक ग्रन्थ कौनसा है?
उत्तर – समयसार
प्रश्न 5 समयसार का क्या अर्थ है?
उत्तर – शुद्धात्मा
प्रश्न 6 सच्चे सुख की प्राप्ति कैसे होती है?
उत्तर – शुद्धात्मा के आश्रय से।
प्रश्न 7 शुद्धात्मा के आश्रय से क्या तात्पर्य है?
उत्तर – आत्मवस्तु को अर्थ व तत्त्व से जानकर आत्मवस्तु में स्थित होना।
प्रश्न 8 समयसार पढने से क्या लाभ है?
उत्तर – जो समयसार पढकर इसमें प्रतिपादित आत्मवस्तु को तत्त्व व अर्थ से जानकर उस आत्मवस्तु में स्थित होता है, वह सच्चा सुख प्राप्त करता है।

उम्मीदरत्न अवार्ड हेतु चयन

विगत 40 वर्षों से नियमित प्रकाशित समन्वय वाणी (पाक्षिक) के सम्पादक जर्नलिस्ट **अखिल बंसल** जयपुर को पत्रकारिता व समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए उम्मीदरत्न सम्मान-2020 के लिए चयन किया गया है। यह सम्मान उन्हें उम्मीद हैल्पलाइन फाउन्डेशन जयपुर द्वारा रविवार दिनांक 23 फरवरी को श्री भैरोसिंह शेखावत स्मृति भवन राजस्थान चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स जयपुर में समारोहपूर्वक प्रदान किया जायेगा। **– उत्तम जैन सौगानी**

आवश्यकता

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में पूजन एवं स्वागत कक्ष व्यवस्था हेतु एक व्यक्ति की आवश्यकता है। 35 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति को प्राथमिकता।

संपर्क करें – 9758643202, 8233372891

ज्ञानगोष्ठी संपन्न

गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ देशभूषण-कुलभूषण छात्रावास की सत्रहवीं गोष्ठी दिनांक 11 जनवरी को '**प्राचीन कवियों के भजन**' विषय पर गोष्ठी संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री विजयकुमारजी जैन (हाथरस वाले) मुम्बई एवं मुख्य अतिथि श्री विजयभाई बोटादरा घाटकोपर व श्री नेमचंदजी कांदीवली थे। निर्णायक के रूप में श्री रितेशजी जैन मुम्बई व श्री हिमांशुजी जैन मुम्बई उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान वेदांत जैन वाडेगांव अकोला ने प्राप्त किया। गोष्ठी का मंगलाचरण अक्षद जैन बुलढाणा एवं संचालन ऋषिकेश जैन वल्हीवडे कोल्हापुर व पार्श्व जैन वागपी कोल्हापुर ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित शुभमजी शास्त्री ने किया।

अठारहवीं ज्ञानगोष्ठी दिनांक 20 जनवरी को '**प्रथमानुयोग की कहानियाँ**' विषय पर संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रभाई गांधी मुम्बई एवं मुख्य अतिथि श्रीमती नैनाबेन गांधी मुम्बई थे। निर्णायक के रूप में श्री बंडोपंतजी सोनटक्के नासिक, श्री कुलभूषणजी जैन गजपंथा व श्रीमती आरती सोनटक्के नासिक उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान परिमल जैन अकोला ने प्राप्त किया। गोष्ठी का मंगलाचरण निशांत जैन शिरपुर एवं संचालन अक्षद जैन बुलढाणा व दर्शन जैन नासिक ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित शुभमजी शास्त्री ने किया।

हार्दिक बधाई!

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के 10वें बैच के स्नातक डॉ. संजय कुमार शाह, परतापुर-बांसवाड़ा के सुपुत्र **श्री मनन जैन** ने प्रथम प्रयास में सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की है। ज्ञातव्य है कि मनन जैन श्री कुन्दकुन्द कहान जैन विद्यार्थी गृह सोनगढ के प्रथम बैच के विद्यार्थी हैं एवं कक्षा 11 व 12 का अध्ययन चैतन्यधाम में रहकर किया है।

इस उपलब्धि पर टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

शोक समाचार

ठाकुरगंज (बिहार) निवासी श्री कैलाशचंदजी जैन का दिनांक 26 जनवरी को 94 वर्ष की आयु में अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप ठाकुरगंज में तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में अत्यंत सक्रिय कार्यकर्ता थे एवं अनेक मुमुक्षु संस्थाओं से सक्रियरूप से जुड़े थे।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

मंगल अवसर...

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी के त्रिजन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित पंचतीर्थ जिनालय का

अपूर्व अवसर...

आठवाँ वार्षिक महोत्सव

श्री पंचास्तिकाय संग्रह महामण्डल विधान

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर श्री टोडरमलजी

आमंत्रण पत्रिका

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

शुक्रवार, 28 फरवरी से रविवार, 1 मार्च, 2020 तक

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था। **महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु आठवाँ वार्षिक महोत्सव शुक्रवार 28 फरवरी से रविवार 1 मार्च 2020 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंद भारिल्ल कृत **पंचास्तिकाय संग्रह विधान** का आयोजन होगा। साथ ही विशिष्ट विद्वानों द्वारा प्रवचनों, प्रौढ कक्षाओं व गोष्ठियों के माध्यम से तत्त्वज्ञान का अपूर्व लाभ प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति आदि का भी आयोजन होगा। **विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री द्वारा संपन्न होंगे।**

विद्वानों के अन्तर्गत तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री आदि के माध्यम से प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा।

इस महोत्सव में **मुम्बई से** सर्वश्री कांतिभाई आर.मोटाणी, विपुलभाई के.मोटाणी, अरुणजी आर.दोंडल, कमलकुमारजी बड़जात्या, विनोदजी शाह, नितिनभाई सी.शाह, संजयजी कोठारी; **कोलकाता से** सुरेशचंदजी पाटनी, सुशीलकुमारजी बजाज (मुन्नाभाई); **सागर से** सेठ श्री गुलाबचंदजी जैन, सुनीलकुमारजी सर्राफ; **भोपाल से** अशोककुमारजी जैन 'सुभाष ट्रांसपोर्ट', महेन्द्रकुमारजी चौधरी; **अहमदाबाद से** रमेशभाई शाह वस्त्रापुर, सतीश अमृतभाई मेहता; **जयपुर से** राजीवजी जैन (संभव जेम्स), महेन्द्रकुमारजी पाटनी के अतिरिक्त अजितभाई जैन बड़ौदा, रमेशभबूतमलजी भण्डारी बैंगलोर, विनोदजी जैन छाबड़ा सूरत, वीशूभाई जैन सूरत, अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर, सुरेशचंदजी जैन शिवपुरी, पण्डित शिखरचंदजी एवं डॉ. संजयजी जैन विदिशा, सुरेशकुमारजी एडवोकेट बानपुर, अनूपजी नजा ललितपुर, मुन्नालालजी जैन ललितपुर (अभिलाषा ट्रेवल्स) आदि महानुभाव भी पधार रहे हैं।

विशेष कार्यक्रम

- आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी के व्यक्तित्व कर्तृत्व पर आधारित वर्तमान छात्रों एवं स्नातकों द्वारा गोष्ठियों का आयोजन)
- श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का पुरस्कार वितरण समारोह
- शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का भव्य दीक्षांत समारोह
- परमागम ऑनर्स का विशेष सेमिनार
- नवनिर्मित स्वागत कार्यालय का उद्घाटन
- सीमंधर जिनालय के शिखर पर नवीन ध्वजारोहण
- नवीनीकृत आचार्य कुन्दकुन्द पुस्तकालय का उद्घाटन

ध्वजारोहण एवं उद्घाटन समारोह

शुक्रवार, 28 फरवरी 2020 प्रात: 9.00 बजे से

अध्यक्ष -	श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, जयपुर
ध्वजारोहणकर्त्ता -	श्री निहालचंद घेवरचंदजी जैन, पीतल फैक्ट्री, जयपुर
वार्षिकोत्सव उद्घाटनकर्ता -	श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी, किशनगढ
मंडप उद्घाटनकर्त्ता -	श्री शान्तिलालजी चौधरी, भीलवाड़ा
मंच उद्घाटनकर्त्ता -	श्रीमती कविता-प्रकाशचंदजी छाबड़ा परिवार, सूरत

दैनिक कार्यक्रम

शुक्रवार, दिनांक 28 फरवरी

प्रात:	5.15	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन
	6.15	गाथा पाठ एवं जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्लजी के प्रवचनों का प्रसारण
	7.00	मंगलकलश स्थापना
	7.15	**श्री पंचास्तिकाय संग्रह विधान**
	9.00	ध्वजारोहण, प्रवचन मण्डप उद्घाटन, उद्घाटन सभा समारोह
	10.30	प्रवचन : **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल**
	11.30	आचार्य कुन्दकुन्द सरस्वती पुस्तकालय का उद्घाटन
दोपहर	2.30	पण्डित टोडरमल व्यक्तित्व कर्तृत्व पर वर्तमान छात्रों द्वारा गोष्ठी
सायं	6.30	जिनेन्द्र भक्ति (पंचतीर्थ जिनालय)
	7.15	गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन
	7.45	प्रवचन : विशिष्ट विद्वानों द्वारा
	8.30	भव्य पुरस्कार वितरण समारोह

शनिवार, दिनांक 29 फरवरी

प्रात:	5.15	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन
	6.15	गाथा पाठ एवं जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्लजी के प्रवचनों का प्रसारण
	7.00	**श्री पंचास्तिकाय संग्रह विधान**
	8.45	गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन
	9.15	परमागम ऑनर्स का सेमिनार
दोपहर	2.30	पण्डित टोडरमल व्यक्तित्व कर्तृत्व पर स्नातक विद्वानों द्वारा गोष्ठी
सायं	6.30	जिनेन्द्र भक्ति (पंचतीर्थ जिनालय)
	7.15	प्रथम प्रवचन : विशिष्ट विद्वानों द्वारा
	8.15	भव्य दीक्षांत समारोह

रविवार, दिनांक 1 मार्च

प्रात:	5.15	आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन
	6.15	गाथा पाठ एवं जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्लजी के प्रवचनों का प्रसारण
	7.00	**श्री पंचास्तिकाय संग्रह विधान**
	8.30	गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन
	9.00	प्रवचन : **डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल**
	10.00	नवनिर्मित स्वागत कक्ष का उद्घाटन
	10.15	श्रीजी की भव्य शोभायात्रा
	11.15	सीमंधर जिनालय के शिखर पर ध्वज विराजमान
	11.30	महामस्तकाभिषेक
सायं	6.30	जिनेन्द्र भक्ति (पंचतीर्थ जिनालय)
	7.15	प्रवचन : विशिष्ट विद्वानों द्वारा

स्वागतकक्ष उद्घाटनकर्त्ता - श्री विद्याप्रकाश-संजयकुमार-अजयकुमार एवं समस्त दीवान परिवार, सीकर, सूरत

पुरस्कार वितरणकर्ता - श्री महेन्द्रकुमारजी-राहुलजी गंगवाल, जयपुर, श्री इन्द्रचंदजी कटारिया जयपुर

दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि - श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री सुशीलकुमारजी सेठी दिल्ली, श्री प्रकाशचंदजी छाबड़ा सूरत, डॉ. भास्करजी शर्मा (प्राचार्य-राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर), पण्डित अरुणजी बण्ड (एस.ओ.डी.-संस्कृत शिक्षा मंत्रालय, जयपुर)

महोत्सव के आमंत्रणकर्ता - श्री प्रेमचंद-सुनीता बजाज, तन्मय-ध्याता बजाज परिवार, कोटा

विशेष आकर्षण - 29 फरवरी को टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों के अभिभावकों का सम्मिलन

विधान आमंत्रणकर्त्ता - • श्री महेन्द्रकुमारजी, राहुल, विनीत, धार्मिक गंगवाल परिवार जयपुर • श्री सौरभजी जैन एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन, मेरठ • श्रीमती कांता सेठी माताश्री शैलेन्द्रजी सेठी परिवार, जयपुर • श्रीमती तरुणा-सचिन जैन, तन्दुल, विशुद्धि जैन, दिल्ली • श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल, टोडरमल स्मारक, जयपुर

कार्यक्रम स्थल एवं संपर्क सूत्र - ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन नं. (0141) 2705581, 2707458 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

विशेष अनुरोध : आप कब, किस साधन से, कितने लोग जयपुर पधार रहे हैं, इसकी पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें, ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

निवेदक

अध्यक्ष
श्री सुशीलकुमार गोदिका, जयपुर

महामंत्री
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, जयपुर

एवं समस्त ट्रस्टीगण - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

विनम्र अनुरोध - इस पत्रिका को सभी लोग देख सकें ऐसे सार्वजनिक स्थान पर अवश्य लगा देवें।

क्या आप अपने बच्चों को जिनधर्म के संस्कार देना चाहते हैं .....
क्या आप जैन धर्म की रोचक जानकारियों से परिचित होना चाहते हैं ... तो
संपूर्ण दिगम्बर जैन समाज की एकमात्र धार्मिक बाल पत्रिका
चहकती चेतना के सदस्य बनिये।
संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर
प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन (रजि.) जबलपुर (म.प्र.)

संपर्क
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, लाल स्कूल के पास, फूटाताल, जबलपुर - 482 002 मध्यप्रदेश
मोबा. 9300642434 ई-मेल : chehaktichetna@yahoo.com

तू अपनी यह वक्रता और मायाचार कब त्यागेगा? क्या अब भी तुझे मोक्ष जाने की कोई जल्दी नहीं है?

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

इसी लेख से –

कदाचित् किसी ज्ञानी-धर्मात्मा के प्रति तेरा अनन्त राग और उनके विरह की वेदना ही तो तुझे विचलित नहीं कर रही है?

राग तो राग है भाई!

''राग तो आग है, किसी के प्रति ही क्यों न हो, वह तो जलाएगा ही''...

''क्यों नहीं जहाँ से भी जिसके पास से भी केवली भगवान की और सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा की वाणी सुनने और पढने को मिले, तदनुसार युक्ति और विवेक के अनुसार अपने स्वरूप का निर्णय करूँ और फिर अपने उस निर्णय का हाजराहजूर भगवान आत्मा से मिलान कर लूँ।

यदि तीर्थंकर केवली विद्यमान भी हों और हमने उनकी वाणी प्रत्यक्ष भी सुनी हो तब भी ***तत्त्वनिर्णय की विधि तो यही है।***''

हे भव्य आत्मार्थी !

इस कलिकाल में वीतरागी, सर्वज्ञ का तो विरह है। सम्यग्दृष्टि ज्ञानी का भी संयोग हो या न हो अथवा संभव है संयोग होकर फिर विरह हो जावे।

यदि अब ***आज सम्यग्दृष्टि का संयोग मुझे नहीं है तब वियोग की अपेक्षा तो सम्यग्दृष्टि और केवली दोनों ही मेरे लिए समान हुए न!***

तब यदि आश ही करनी है तो **सम्यग्दृष्टि की क्या आश करूँ, केवली की क्यों नहीं?**

यूं भी ***वियोग तो वियोग है, पलभर पूर्व हुआ हो या अनंतकाल पूर्व।***

अब यदि अभी संयोग दोनों का ही नहीं है और वाणी दोनों की ही हमारे पास विद्यमान है, तो हमारे लिए तो दोनों ही समान ही है न?

फिर संयोग और वियोग तो अपने आधीन हैं नहीं, पर अपना भगवान आत्मा अपने साथ है, मैं स्वयं ही तो आत्मा हूँ। तब ***क्यों नहीं जहाँ से भी जिसके पास से भी केवली भगवान की और सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा की वाणी सुनने और पढने को मिले, तदनुसार युक्ति और विवेक के अनुसार अपने स्वरूप का निर्णय करूँ और फिर अपने उस निर्णय का हाजराहजूर भगवान आत्मा से मिलान कर लूँ।***

यदि तीर्थंकर केवली विद्यमान भी हों और हमने उनकी वाणी प्रत्यक्ष भी सुनी हो तब भी ***तत्त्व निर्णय की विधि तो यही है।***

अब तू ही बतला कि यदि अभी तू स्वयं समवशरण में बैठकर ही भगवान की वाणी सुन रहा हो तब भी तू क्या करेगा? तब भी तो यही करना होगा।

तब फिर तेरा क्या लुट गया है?

क्या है जो तुझे प्राप्त नहीं है?

कौन है जो तुझे आत्मानुभव से रोकता है?

कदाचित् किसी ज्ञानी-धर्मात्मा के प्रति तेरा अनन्त राग और उनके विरह की वेदना ही तो तुझे विचलित नहीं कर रही है?

राग तो राग है भाई!

राग तो आग है, किसी के प्रति ही क्यों न हो, वह तो जलाएगा ही।

जो ज्ञानी थे, जिन्हें तूने ज्ञानी स्वीकार किया था उनका विरह हो गया है। कदाचित् आज भी ज्ञानी विद्यमान हों, पर तुझे उनका संयोग न हो। यह भी संभव है कि संयोगवश तुझे उनका संयोग हो भी जावे और तू उन्हें पहिचान ही न पाए।

आखिर ज्ञानी की पहिचान भी तो ज्ञानी ही कर सकता है न, अज्ञानी तो कर नहीं सकता।

तब तेरे पास उपाय ही क्या है, तुझे उस ज्ञानी से परिचय कौन कराएगा? अब कौन है जो तुझे बतलाए कि फलां व्यक्ति ज्ञानी है, ***उसके स्वयं के ज्ञानी होने का प्रमाण कौन देगा?***

यदि वही स्वयं ज्ञानी न हुआ तो? यदि वह भी अज्ञानी ही हो तो?

इसप्रकार तो ***तू जिसे ज्ञानी मान रहा है, उस ज्ञानी और उसके ज्ञान के प्रति तेरी श्रद्धा मात्र एक संयोग ही तो है।***

मात्र संयोगवशात् ही तुझे इस बात का भरोसा हो गया कि फलां व्यक्ति ज्ञानी है या था। ***तेरे पास तो उस ज्ञानी के भी ज्ञानी होने का कोई प्रमाण नहीं है न?***

यूं भी ***जब तू स्वयं ही ज्ञानी नहीं है तो किसी के ज्ञानी होने या न होने का निर्णय करने वाला तू कौन है?***

तेरे निर्णय की कीमत ही क्या है?

और फिर तूने इस जीवन में किसी ज्ञानी की खोज के लिए प्रयास ही कब किए हैं?

ऐसे कई लोग हैं, जिन्हें बहुत लोग ज्ञानी मानते हैं, जिनके तत्त्व निरूपण में भी कोई विपरीतता नहीं है, पर वे ज्ञानी हैं या नहीं इस बात की हमने कब परीक्षा करने की कोशिश की है? ***हम तो उन्हें दूर से ही अस्वीकार कर देते हैं? क्यों?***

सत्य तो यह है कि कोई ज्ञानी (अनुभवी) है या अज्ञानी, यह

उसकी अपनी निधि है, पर यदि वह जिनवाणी के अनुसार तत्त्व का सच्चा निरूपण करता है तो वह हमारे लिए तो कार्यकारी है और यदि पूर्व में हमें कभी किसी ज्ञानी की देशना सुलभ हुई हो तो सम्यग्दर्शन में निमित्त भी हो सकती है। अगर हम उक्त तथ्य को स्वीकार नहीं करेंगे तो उस देश और काल में तो **तत्त्वचर्चा का ही लोप हो जाएगा,** जहाँ कन्फर्म और प्रमाणित ज्ञानी की उपस्थिति न हो।

क्या आपको या किसी को भी यह इष्ट हो सकता है?

कहीं ऐसा तो नहीं है न कि अपने किसी व्यामोहभरे आग्रह के कारण हम स्वयं अपने लिए और अन्यों के लिए आत्मकल्याण का मार्ग ही अवरुद्ध कर रहे हैं?

क्या यह आत्मघाती अनर्थ नहीं है?

अरे अभागे!

अनादिकाल से ऐसे ही दुराग्रहों के कारण तू संसार में भटक रहा है, क्या फिर भी तूने कोई सबक नहीं सीखा?

तू अपनी यह वक्रता और मायाचार कब त्यागेगा?

क्या अब भी तुझे मोक्ष जाने की कोई जल्दी नहीं है?

अरे भोले!

यदि मेरी माने तो उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हमें अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करके उचित निर्णय करना योग्य है, अन्यथा हमें तो मालूम नहीं कि केवली भगवान के ज्ञान में तेरा भविष्य कैसा आया है।

सिद्धक्षेत्र तारंगाजी में शिविर

तारंगा-मेहसाणा (गुज.) : यहाँ सिद्धक्षेत्र तारंगाजी पर चैतन्य युवा फोरम के तत्त्वावधान में दिनांक 27 से 29 दिसम्बर 2019 तक प्रथम युवा शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई के रोचक शैली में आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर पूजन एवं भक्ति संबंधी सभी कार्य पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम द्वारा संपन्न हुए। शिविर में मुम्बई, हिम्मतनगर, तलोद आदि अनेक नगरों तथा अहमदाबाद के विविध उपनगरों से पधारे 15 से 35 वर्ष की आयु के लगभग 375 युवाओं ने विशेष रूप से धर्मलाभ लिया। कक्षाएं प्रोजेक्टर पर ली गईं। कक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पूजन-भक्ति आदि सभी आयोजन विशेषरूप से युवाओं को लक्ष्य में रखकर ही तैयार किए गए थे। अन्तिम दिन सामूहिक तीर्थवन्दना का कार्यक्रम रखा गया। ज्ञातव्य है कि सभी युवाओं ने इन्टरनेट, मोबाइल फोन से दूर रहकर धर्मलाभ लिया।

शिविर की सफलता में समाज के प्रमुख श्री सुभाषभाई कोटडिया, मंत्री श्री मुकेशभाई, श्री मितेशभाई, शिविर के चेयरमैन श्री रिन्केशभाई, श्री निश्चयभाई, श्री शारलीनभाई की सक्रिय भूमिका रही। शिविर के प्रायोजक (Sponcer) श्री राहुल नवीनचन्द्र मेहता मुम्बई एवं नैवेद्य नीलेशभाई शाह मुम्बई थे। **- दर्शिल जैन, साजन गांधी**

54वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 17 मई से बुधवार, 3 जून 2020 तक

कार्यक्रम स्थल :- चैतन्यधाम, अहमदाबाद-हिम्मतनगर नेशनल हाइवे-48, पोस्ट-धणप, जिला-गांधीनगर (गुज.)

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

संपर्क सूत्र - ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
फोन - 0141-2705581, 2707458; **Email - ptstjaipur@yahoo.com**

आवास प्रमुख - पण्डित सचिन शास्त्री (9924281114), पण्डित मनीष शास्त्री (8087922580)

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 28 जनवरी 2020

प्रति,